

## एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन

डॉ० उमेश सिंह\*

\*असि. प्रोफेसर, एम.एड. विभाग, डी.वी. कॉलेज, उरई, जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

ईमेल- [umeshsinghyadav16@gmail.com](mailto:umeshsinghyadav16@gmail.com)

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17317490>

Accepted on: 25/09/2025

Published on: 10/10/2025

### सारांश:

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही समाज को सशक्त नहीं बनाती वरन् मानव संसाधन का भी सर्वांगीण विकास भी करती है। शिक्षा ही आधुनिक समाज की मजबूत नींव है एवं कंप्यूटर अभिवृत्ति किसी छात्र या छात्रा का कंप्यूटर के उपयोग एवं अनुदेशन के संबंध में कंप्यूटर के प्रति दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, चिंता एवं अभिव्यक्ति से संबंधित है। 21वीं सदी में ज्ञानवान एवं डिजिटलीकरण के युग में छात्र -छात्राओं का कंप्यूटर के प्रति सकारात्मक अभिव्यक्ति प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर से ही प्रारम्भ होनी चाहिए। उच्च स्तर पर आते, आते छात्र -छात्राओं में यह ज्ञान और अधिक विकसित हों जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ‘एम.एड. स्तर के विद्यार्थियों में कंप्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। शोधार्थी ने प्रतिदर्श हेतु 100 किशोर एवं किशोरियों *ksa* को लिया है। अध्ययन हेतु प्रस्तुत लघशोध में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एम.एड. स्तर के पाँच महाविद्यालयों को लिया है। शोधार्थी द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त कम्प्यूटर विकास अभिवृत्ति मापनी (CEAS) डॉक्टर तारेष भाटिया एवं श्री सुरेन्द्र यादव द्वारा निर्मित है। प्रस्तुत मापनी द्वारा महाविद्यालय स्तर के एम.एड. छात्र एवं छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मापन किया है। आंकड़ों के संयोजन के आधार पर वर्तमान में छात्र एवं छात्राएं दोनों में सीखने की स्थितियाँ भिन्न प्रकार की होती हैं। बालक के लिए घर उसकी शुरूआती शिक्षा-दीक्षा का मुख्य केन्द्र बिन्दु होता है। समय के साथ बालक की जिज्ञासा और सीखने की क्षमता में वृद्धि होने लगती है परिणाम स्वरूप उसे विद्यालयी प्रांगण में भेजा जाता है, क्योंकि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ छात्रों को सुरक्षित और सकारात्मक वातावरण तो प्राप्त होता ही है साथ ही उसकी शिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती है। विद्यालय की संस्कृति व उसके वातावरण का प्रभाव बालक की सफलता, खुशी और उपलब्धि पर भी देखने को मिलती है। चूंकि अक्सर यह देखा गया है कि विद्यार्थी विद्यालय को

जिस नजरिये से देखना, सोचना और महसूस करना शुरू कर देता है, वही स्थितियाँ उसे सीखने के लिए मानसिक और भावात्मक रूप से आगे ले जाती है।

**शब्द कुंजी-** एम.एड. स्तर, कंप्यूटर शिक्षा व शैक्षणिक उपलब्धि।

### प्रस्तावना:

शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक, एवं राष्ट्र का प्रखर, चरित्र-सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत-प्रोत होकर संस्कृति तथा सम्यता को पुर्नजीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न तूफानों में प्रगति का जितना बड़ा योगदान अग्नि तथा पहिये का रहा है संभवत वर्तमान में उतना ही योगदान कंप्यूटर का हो रहा है। सैकड़ों वर्ष पूर्व गणना के लिए सबसे पहले बनी युक्ति अबेक्स का चीन में निर्माण हुआ था। अबेक्स के बाद सन 1617 में स्कॉटलैंड के गणितज्ञ जॉन नेपियर ने एक युक्ति का आविष्कार किया जो कि नेपीनियस फोन के नाम से जाने गई। तत्पश्चात सन 1642 में फ्रांस के बालक बेल्स पास्कल ने पास्कल केलकुलेटर बनाया इसके कई वर्षों बाद जर्मनी के वैज्ञानिक गोट फ्रेट ओनली बिजनेस में गणना हेतु लेफ्ट डस मशीन बनाई। 19वीं शताब्दी के आते-आते इंग्लैंड के चालस बैबेज ने डिफरेंस इंजन का आविष्कार किया जो कि कंप्यूटर निर्माण में मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने अपनी मशीन को सुधारने हेतु एनालिटिकल इंजन बनाया जो कि आधुनिक कंप्यूटर के प्रारूप से मिलती-जुलती सरचना थी। सरकारी शिक्षा में सीबीएसई पैटर्न लागू करने के वर्षों बाद अपर प्राइमरी और प्राइमरी कक्षाओं से ही कंप्यूटर दक्षता का अभियान चलाने की सोच वक्त के साथ कदमताल करने की कवायद है। शहरी क्षेत्रों में फैले निजी स्कूल इस दिशा में पहले से ही काम कर रहे हैं, जबकि ग्रामीण इलाकों की शिक्षा सरकार के ही भरोसे है। शहरों के सरकारी स्कूलों में हालांकि कंप्यूटर शिक्षा लागू है, किंतु इन इलाकों में रहने वाले बच्चे अपने प्रयासों से कम से कम इतना तो जान ही जाते हैं कि कंप्यूटर क्या चीज है? गांव का बालक आज भी इससे अनजान है जबकि आज की 55 फीसद आबादी गांव में ही रहती है। वह गरीब तो है ही बहुत भोली भाली भी है, उसकी महत्वकांक्षा सीमित है, इसलिए भी उसके विकास की गति अत्यंत धीमी है। ऐसी स्थिति में कंप्यूटर शिक्षा बहुत उपयोगी साबित होगी जब केंद्रों के माध्यम से पंचायत भवनों को कंप्यूटर और इंटरनेट सुविधा

उपलब्ध कराई जा रही है इससे गांव वालों को परिचित होना आवश्यक है इसलिए विद्यालयों को कंप्यूटर से जोड़ा जाना आवश्यक है।

### अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व:

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तित्व विकास में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही समाज को सशक्त नहीं बनाती वरन् मानव संसाधन का भी सर्वांगीण विकास भी करती है। शिक्षा ही आधुनिक समाज की मजबूत नींव है एवं कंप्यूटर अभिवृत्ति किसी छात्र या छात्रा का कंप्यूटर के उपयोग एवं अनुदेशन के संबंध में कंप्यूटर के प्रति दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, चिंता एवं अभिव्यक्ति से संबंधित है। 21वीं सदी में ज्ञानवान एवं डिजिटलीकरण के युग में छात्र -छात्राओं का कंप्यूटर के प्रति सकारात्मक अभिव्यक्ति प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर से ही प्रारम्भ होनी चाहिए। उच्च स्तर पर आते, आते छात्र -छात्राओं में यह ज्ञान और अधिक विकसित हो जाता है। ड्रेमबोट एवं अन्य (1985), हार्वे एवं विलसन (1985), फफशा एवं अन्य (1986) कॉलिस एवं उलीला (1986) कोलिस एवं विलियम (1987) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि महिलाओं की तुलना में पुरुषों का कंप्यूटर के पक्ष में झुकाव अधिक पाया गया। इसी कारण से शोधकर्ता के मस्तिष्क में विचार आया कि यदि विश्वविद्यालय स्तर पर एम.एड. जैसे पाठ्यक्रमों में भी यदि छात्रों को कंप्यूटर के द्वारा शिक्षा दी जाए तो उनके ज्ञान को स्थाई, रुचि पूर्ण एवं जीवन के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है, और इसका मुख्य कारण यह भी है कि इस स्तर पर आकर विद्यार्थियों की बुद्धिलिंग्घ माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की अपेक्षा अधिक विकसित हो जाती है और वह अन्य शिक्षकों द्वारा बताई गई किसी भी बात को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। इसी स्तर पर युवाओं का भविष्य खुलकर सामने आता है कि वह क्या बनना चाहते हैं और उनका रुझान किस तरफ है, अतः इन सभी कारणों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने इस प्रकरण से संबंधित विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन करके एवं अपने निर्देशक के मार्गदर्शन का अनुगमन करके एम.एड. स्तर के विद्यार्थियों में कंप्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को अपनी समस्या के रूप में चुना।

**शीर्षक कथन - “एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन”।**

### अध्ययन के उद्देश्य:

- 1.एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- 2.एम.एड. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा का अध्ययन का अध्ययन करना।
- 3.एम.एड. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा का अध्ययन का अध्ययन करना।

### अध्ययन की परिकल्पनाएं:

1. एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. एम.एड. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. एम.एड. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

### अध्ययन की परिसीमाएं:

समय तथा परिस्थिति को देखते हुए शोधार्थी ने अपना अध्ययन कार्य बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एम.एड. महाविद्यालयों तक ही सीमित रखा है।

1. प्रस्तुत लघुशोध में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एम.एड. स्तर के पाँच महाविद्यालयों को लिया गया है।
2. प्रस्तावित अध्ययन में एम.एड. शोधार्थियों को ही शोध हेतु चुना गया है।
3. प्रतिदर्श हेतु छात्र/छात्राओं की संख्या **100** है।

### सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन:

मेनारिया, सरिता (2017) - ने अपना अध्ययन “कला विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र/छात्राओं का कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति” पर कार्य किया। अध्ययनों के परिणाम में कम्प्यूटर उपयोग के प्रति कला विज्ञान व वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति औसत पाई गई। कुमारी, रिभा व कुमार (2018) - ने अपना अध्ययन “विद्यालय के छात्रों में तकनीकी शिक्षा का अभिप्राय एवं महत्व” नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि -

1. निम्न पारिवारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी कुछ सीमा तक अपने परिवार की आर्थिक स्थिति एवं आकार को प्रायःगत रखते हुए कैरियर का चयन करते हैं, जबकि उच्च पारिवारिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में यह स्थिति प्रतिकूल रही।

2. पारिवारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी द्वारा कैरियर चयन अपनी योग्यता, रुचि व क्षमता के अनुसार किया जाता है।

समीर, आर्षिया (2019) - ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन वायोटेक्नोलाजी के शिक्षण में अत्यन्त प्रभावी है। व्याख्यान विधि एवं कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन दोनों ही शिक्षण के लिए अत्यन्त प्रभावी है। सुन्दरम व भार्गव सुनीता (2022) - ने अपना अध्ययन “डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति जयपुर जिले के सन्दर्भ में” नामक शीर्षक पर किया। निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से ही जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ में कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों यथा-  
-डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान

-परम्परागत शिक्षण का उपयोग

-साफ्टवेयर का प्रयोग

-नेटवर्क का प्रयोग में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शर्मा, मन्जू कुमारी (2023) ने अपना अध्ययन, “अध्यापक शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन” नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया और पाया कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक तथा प्रशिक्षणार्थियों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति एवं उसके समस्त आयामों का प्रभाव, विद्यार्थियों के लिए उपयोगिता, शिक्षण के लिए उत्पादकता एवं शिक्षकों की रूचि एवं स्वीकृति में सार्थक पाया।

**शोध विधि** - प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

**प्रतिदर्श** - प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श चयन हेतु स्तरित यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

**उपकरण** - प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त कम्प्यूटर शिक्षा अभिवृत्ति मापनी छ्ब्मा, डॉक्टर तारेष भाटिया एवं श्री सुरेन्द्र यादव द्वारा निर्मित है।

**सांख्यिकीय विधि**- अमुख कार्य में जांचकर्ता ने sample के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करते हुए परिकल्पनाओं की व्याख्या की है।

**आंकड़ों का विष्लेषण** -

1. **परिकल्पना-1:** एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव का कोई सार्थक अंतर नहीं है।

#### सारणी संख्या-1

,e0,M0 Lrj ds fo   kFkhZ	la[;k	e/;eku	ekud fopyu	e/;eku dk vUrj	ekud =qfV vUrj	ØkfUrd vuqikr	IkFkZdrk Lrj
Nk=	50	156- 26	14-68	6-94	2-95	2-35	0-05 Lrj ij vLoh—r
छात्रा	50	163-20	14-78				

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

तालिका संख्या-1 के अवलोकनार्थ प्रदत्त छात्रों का मध्यमान **156.26** है एवं छात्राओं का मध्यमान **163.20** है तथा परिणित **CR VALUE- 2.35** है, जो कि **DF 98** के लिये **.05** सार्थकता स्तर पर सारणीमान **1.98** से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है। सार्थकता स्तर **.05** पर अस्वीकृत की जाती है। सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि एम.एड. स्तर पर अध्ययनरत कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा सकारात्मक पायी गयी। परिणामतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

परिकल्पना क्रमांक- 02 एम.एड. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

### Ikj.kh la[;k--2

,e0,M0 Lrj ds fo   kFkhZ	la[;k	e/;eku	ekud fopyu	e/;eku dk vUrj	ekud =qfV vUrj	t-test vuqikr	IkJkZdrk Lrj
xzkeh.k Nk=	25	116- 28	11-68	3-08	1-35	1-37	0-05 Lrj ij Loh—r
xzkeh.k Nk=k,	25	113-20	10-78				

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित छात्रों का मध्यमान **116.28** है एवं छात्राओं का मध्यमान **113.20** है तथा परिणित **T-TEST Value 1.37** है, जो कि क **df 48** के लिये **.05** सार्थकता स्तर पर सारणीमान **1.98** से कम है। अतः शून्य परिकल्पना एम.एड. ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है। सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि एम.एड. ग्रामीण छात्रों में कम्प्यूटर

शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा सकारात्मक पायी गयी। परिणामतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

**परिकल्पना क्रमांक- 03** एम.एड. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

### सारणी संख्या 03

,e0,M0 Lrj ds fo   kFkhZ	la[;k	e/;eku	ekud fopyu	e/;eku dk vUrj	ekud =qfV vUrj	t- test	IkFkZdrk Lrj
'kgjh Nk=	25	103- 26	08-68				0-05 Lrj ij Loh—r
'kgjh Nk=k,	25	101- 20	09-78	2-06	1-72	1-12	

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

तालिका क्रमांक 03 के अवलोकनार्थ स्पष्ट है कि प्रदर्शित छात्रों का मध्यमान 103.26 है एवं छात्राओं का मध्यमान 101.20 है तथा परिणामित t-test value 1.12 है, जो कि के df 48 के लिये .05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 1.98 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना एम.एड. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है। सार्थकता स्तर .05 पर स्वीकृत की जाती है। सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि एम.एड. शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा सकारात्मक पायी गयी। परिणामतः छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

#### शैक्षिक निहितार्थः

प्रस्तुत अनुसंधान एम.एड. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर कंप्यूटर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन” किया गया है। यह अध्ययन एम.एड. महाविद्यालय के छात्र, छात्राओं का कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति स्तर की योग्यता परखने की दिशा में शोधार्थी द्वारा किया गया एक लचीला प्रयत्न है। इस शोध के द्वारा शिक्षण प्रशिक्षण विभाग के छात्र

एवं छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित महत्वपूर्ण एवं प्रभावी परिणाम प्राप्त हुये। अध्ययन में पाया गया कि कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति उच्च धनात्मक अभिवृत्ति छात्रों में अधिक है, जबकि छात्राओं में सिर्फ धनात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इसका कारण भारतीय शिक्षा पद्धति में वर्तमान स्वरूप के प्रति आज भी महिलाओं की स्थिति विचारणीय है। अतः हम कह सकते हैं कि कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अभिवृत्ति अधिक है। शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं मानव संसाधन की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। वर्तमान शोध अध्ययन के परिणाम उन शिक्षाशास्त्रियों, समाज सुधारकों, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं, मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों का मार्ग दर्शन करते हैं जो छात्र एवं छात्राओं की समस्या को अनदेखा करते हैं एवं उच्च स्तरीय शिक्षा के लिए नियम एवं पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं तथा छात्रों के निर्देशन एवं परामर्श में रुचि रखते हैं। किसी भी देश में एम.एड. स्तरीय शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। समाज में जिस तरह से व्यक्ति का व्यक्तित्व भिन्न प्रकार का होता है ठीक उसी प्रकार से विद्यालय भी अपनी विशेषता के लिए जाने जाते हैं, अब यह बालक पर निर्भर करता है कि वह उसे किस रूप में ले रहा है। बालक विद्यालय से जो कुछ सीखता है उसका प्रभाव जहाँ एक ओर उसकी अमूर्त शक्तियों पर पड़ता है वहीं उसका व्यवहार परिवर्तित भी होने लगता है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विद्यालय अहम भूमिका निभाता है। सामाजिक प्रक्रिया बालक की चिंतन शैली अभिवृत्तियों व व्यवहार को प्रभावित करती है किन्तु उसमें अभिवृत्तियों की नींव उसके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही पड़ जाती है। इस कारण शिक्षार्थी जीवन में विद्यालयी शिक्षा की भूमिका का सही दायित्व पूर्ण व्यवहार विकसित करने में सामर्थ्य योग्य हो जाता है। समाज में **sa** उस संस्कृति के निर्माण करने की जटिल किन्तु यथोचित मांग हमेशा यह रही है कि निर्माता अपना निर्माण स्वयं करें। प्रकृति प्रदत्त जो क्षमताएं, शक्तियां, वृत्तियां, विषेषताएं और अभिरूचियां मिली हैं उसका विद्यालयी व्यवस्था से क्रमबद्ध रूप से बालक को प्राप्त होनी चाहिए। विद्यालय शिक्षार्थी में सुसम्बद्धता व एकरूपता उत्पन्न करे और उसे स्वतंत्र नैतिक व्यक्तित्व का समुन्नत रूप प्रदान करें। प्रस्तुत अध्ययन में इसी समस्या की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। जिससे भावी एम.एड. स्तर की शिक्षा तथा समाज की व्यवस्था को उत्तम एवं जागरूक नागरिक बनाने की भूमिकाओं को बेहतर तरीके से अदा करके देश एवं स्वयं विकास में योगदान दिया जा सके। आज का विद्यार्थी कल का निर्माता है। वर्तमान में जैसे देखने में आ रहा है उसको ध्यान में रखकर सरकार द्वारा व्यवसायिक शिक्षा को रोजगारप्रक बनाने हेतु पूरी कोशिश की जा सकती है जिसमें कम्प्यूटर शिक्षा की अहम भूमिका हो सकती है।

**सन्दर्भः**

- चौधरी, एन. के. (2014). शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार. शिक्षा प्रकाशन.
- सिंह, ए. आर. (2017). अनुसंधान विधियाँ. हरिप्रसाद भार्गव हाउस.
- खान, एस. (2015). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान. विकाश पब्लिशिंग हाउस.
- सिंह, ए. के. (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन.
- गुप्ता, एस. पी. (2016). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. शारदा पुस्तक भवन.